P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# ग्रामीण पर्यटन के विकास में शिल्पकला का महत्व एवं योगदान
## (राजसमन्द जिले की मोलेला की मृण शिल्पकला के विशेष सन्दर्भ में)

**ज्योति आचार्य**
व्याख्याता,
व्यावसायिक प्रशासन,
मा.ला. वर्मा राजकीय महाविद्यालय,
भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

**सारांश**

भारतीय पर्यटन ने विश्व में अपना एक उच्च स्तरीय मुकाम हासिल किया है। भारतीय पर्यटन इसकी चहुंमुखी प्रगतिशीलता, प्राकृतिक सौन्दर्य सांस्कृतिक व ग्रामीण विरासत के लिए जाना जाताहै। पर्यटन को उद्योग के सर्वोच्च शिखर तक पहुंचाने का श्रेय ग्रामीण व सांस्कृतिक पर्यटन को जाता है। भारत को गाँवों का देश कहा जाता है, हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति के वास्तविक स्वरूप को गाँवों में देखा जा सकता है जो कि ग्रामीण पर्यटन का विशेष हिस्सा रही है। हमारे देश के गाँव ढाणी इतिहास के अनेक गौरवपूर्ण इतिहास के गवाह के रूप में जाने जाते हैं। राजस्थान के राजसमन्द जिले के विश्वप्रसिद्ध श्रीनाथजी की नगरी श्रीनाथद्वारा धार्मिक पर्यटन का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। यहाँ से लगभग 17 किमी दूरी पर मृण शिल्पकला मे प्रसिद्धि प्राप्त छोटा सा गाँव बसा हुआ है जो कि मोलेला के नाम से जाना जाता है। यहाँ के शिल्पकार देश विदेश में अपनी कला का प्रदर्शन कर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। मिट्टी की खुशबू किसे अच्छी नहीं लगती? इसी मिट्टी को आकर्षक व मूर्त रूप देकर मोलेला के मृणशिल्पकार अपनी शिल्पकला से दीपावली पर सजाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के दिए, श्रीनाथजी, गणेश जी, स्थानीय लोक देवताओं, विभिन्न प्रकार की घण्टियाँ आदि खुबसूरत मृण शिल्प बनाते हैं। यहाँ की मिट्टी को आकार देने का काम बहुत खुबसूरती व कुशलता के साथ किया जाता है। प्रतिवर्ष विदेशी सैलानी यहाँ आते हैं और यहाँ के कलाकारों से इस कला का प्रशिक्षण भी लेते हैं। यहाँ के शिल्पकार अनेक बार विदेश जा कर अपनी कला का प्रचार–प्रसार व प्रदर्शन कर चुके हैं तथा कई स्थानीय शिल्पकारों/कलाकारों को राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय सम्मान मिल चुका है। सन् 2012 में मृणशिल्पकार मोहनलाल कुम्हार को इस कला के लिए पद्मश्री पुरस्कार भी मिल चुका हैं । ग्रामीण पर्यटन के विकास में इन शिल्पकारों की टेराकोटा कला क विशेष योगदान रहा है। शोध पत्र का उद्धेश्य मोलेला की इस पारम्परिक शिल्पकला के प्रति सभी कलाप्रेमियों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, सरकार आदि का ध्यान आकर्षित करना एवं ग्रामीण पर्यटन में इस कला के महत्व व योगदान पर प्रकाश डालना है।

**मुख्य शब्द :** मृण शिल्पकला, ग्रामीण पर्यटन, विदेशी सैलानी।

**प्रस्तावना**

भारतीय पर्यटन ने विश्व में अपना एक उच्चस्तरीय मुकाम हासिल किया है। भारतीय पर्यटन को उद्योग के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाने का श्रेय ग्रामीण व सांस्कृतिक पर्यटन को जाता है। प्रतिवर्ष देशी विदेशी सैलानी भारत भ्रमण कर हमारी संस्कृति की विरासत, नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता से रूबरू होते है। यहाँ की स्थापत्य धरोहरों, लोककलाओं, हस्तशिल्प, तीज –त्यौहार, रीति–रिवाज आदि के माध्यम से भारत की संस्कृति को जानने का प्रयास करते हैं। भारत की महान् संस्कृति एवं परम्पराएं इस देश की सबसे बड़ी ताकत है। भारत को गाँवों का देश कहा जाता है तथा हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति के वास्तविक स्वरूप को गाँवों की जीवन शैली में देखा जा सकता है जो कि ग्रामीण पर्यटन का विशेष हिस्सा रही है। हमारे देश के गाँव ढाणी इतिहास के अनेक गौरवपूर्ण अध्याय के रूप में जाने जाते हैं। मारवाड़ की एक लोकप्रिय कहावत है "यशोगाथा को चिरस्थायी छोड़े गये विशाल दुर्गों, मंदिरों एवं मूर्तियों के द्वारा याद रखा जा सकता है।"[1] रंगीले राजस्थान में परम्परागत मूर्तिकला व शिल्पकला एक व्यवसाय के रूप में विकसित हुई है तथा पीढ़ी दर पीढी कलाकार अपनी कला का हस्तान्तरण करते रहे हैं।[2] इस शोधपत्र के माध्यम से

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

परम्परागत शिल्पकलाओं का पर्यटन के विकास में योगदान व महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । इस शोध पत्र में राजसमन्द जिले में स्थित मोलेला की शिल्पकला व शिल्पकारों की मृण शिल्पकला व सुन्दर कलाकारी के बारे में संक्षिप्त अध्ययन का प्रयत्न किया गया है।

**शोध विधि**

इस शोध पत्र में मैने प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों, शिल्पकारों तथा पर्यटकों से बातचीत तथा पत्र–पत्रिकाओं से संबंधित विषय के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी व सूचनाओं का संकलन कर अध्ययन किया है । यह शोध विषय बहुत विस्तृत होने की वजह से मैंने दक्षिणी राजस्थान में स्थित राजसमन्द जिले के मोलेला गाँव का चयन कर यहाँ की विश्वप्रसिद्ध मृण शिल्पकला (टेराकोटा) पर सूक्ष्म अध्ययन कर शोध पत्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

**उद्धेश्यः**

प्रत्येक अनूसंधान कुछ उद्धेश्यों के लिए किया जाता है जिससे संबंधित विषय की संभावनाओं पर आगे बढ़ा जा सके इस अनुसंधान के संक्षिप्त उद्धेश्य निम्नलिखित हैः–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाओं के बारे में पता लगाना ।
2. गाँवों से शहरों की ओर हो रहे पलायन के कारणों का पता लगाना।
3. ग्रामीण पर्यटन से आर्थिक विकास में शिल्पकला के योगदान व महत्त्व का अध्ययन करना।
4. शिल्पकारों के समक्ष आ रही समस्याओं से समाज के सभी वर्गों को अवगत कराना।
5. मृण शिल्पकला में नवप्रवर्तन द्वारा उद्यमिता की खोज करना।

**ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएं**

अति आधुनिकीकरण से पूर्व गाँवों में ही पर्याप्त रोजगार के साधन होने से प्रायः ग्रामीणों का शहरों की ओर पलायन नहीं होता था । वर्तमान परिस्थितियों में जहाँ रोजगार की तलाश में ग्रामीणों को शहरों की ओर जाना पड़ रहा है अगर रोजगार को ही ग्रामीणों तक पहुँचाने की उचित व्यवस्था की जाए तो यह पलायन स्वतः रूक जायेगा। ग्रामीण मानव संसाधनों का आर्थिक विकास में निरन्तर योगदान लेने के लिए ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है कि इस पर्याप्त एवं सर्वसुलभ संसाधनों का गाँवों में निम्नलिखित कार्यों में उपयोग कर उद्यमिता के नये आयाम स्थापित कर रोजगार प्राप्त किया जा सकता है;–

1. खेती एवं बागवानी
2. खादी व कताई
3. पशुपालन व दुग्ध
4. हाथ पिसे मसाले
5. घाणी का तेल
6. गुड़ व खांडसारी
7. मधुमक्खी पालन
8. हाथ बना कागज
9. कढ़ाई का काम
10. मछली पालन
11. मुर्गी पालन
12. केंचुआ खाद का निर्माण
13. गोबर गैस का निर्माण
14. सिलाई बुनाई

**15 शिल्पकला इत्यादि**

**गाँवों से शहरों की ओर ग्रामीणों के पलायन के मुख्य कारण**

जीवनयापन की शैली में परिवर्तन से बड़ी मात्रा में ग्रामीण मानव संसाधन का शहरों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में पलायन हो रहा है। गाँवों से शहरों की ओर हो रहे पलायन के मुख्य कारण निम्नलिखित है;–

**गाँवों में रोजगार का अभाव**

गाँवों में उद्योगों के अभाव के कारण मानव संसाधन का पलायन शहरों की ओर हुआ है। ग्रामीणों की आय का बड़ा भाग जीवनयापन हेतु शहरों में व्यय होने, गाँवों में रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं होने से ग्रामीणों ने जीवनयापन हेतु शहरों एवं नये विकसित हो रहे औद्योगिक क्षेत्रों की ओर पलायन करना प्रारम्भ कर दिया है। शहरों से होने वाली आय का व्यय भी शहरों में होने लगा है इस प्रकार गाँवों की अर्थव्यवस्था लगातार पंगु होती गयी जिससे गाँवों से पलायन का चक्र और तेज हो गया।

**सिंचाई जल की कमी**

सिंचाई जल की कमी से कृषि कार्य मौसमी हो गया है खेती के समय के बाद अतिरिक्त समय में रोजगार के साधन नहीं रहे हैं। जल के निरन्तर दोहन एवं वन क्षेत्र में कमी के फलस्वरूप मानसून की बारिश कम होने लगी है एवं भूमिगत जल में असाधारण कमी आयी है। वर्ष में दो एवं तीन फसल पैदा करने वाली कृषि भूमि पर भी मात्र एक फसल होने लगी है। परिणामस्वरूप ग्रामीण रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं।

**कृषि यन्त्रों के मूल्यों में वृद्धि**

कृषि कार्यों के उपयोग में आने वाली वस्तुएँ यथा खाद, बीज, विद्युत अथवा डीजल, कृषि यन्त्रों इत्यादि के मूल्यों में उस अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है इस वजह से किसानों का कृषि कार्यों के प्रति झुकाव कम हो गया है। परिणामस्वरूप गाँवों से मानव संसाधन का निरन्तर पलायन होना प्रारम्भ हो गया है।

**मूलभूत सुविधाओं का अभाव**

गाँवों में औद्योगिकरण नहीं होने एवं विद्युत तथा परिवहन जैसी मूलभूत सुविधाओं के अभाव के कारण कुटीर उद्योग की उत्पादन गतिविधियाँ रूक जाने से आर्थिक गतिविधियाँ बन्द हो गयी है। विद्युत परिवहन, कच्चेमाल की अनुपलब्धता एवं विक्रय हेतु बाजार के अभाव की वजह से गाँवों में औद्योगिकरण नहीं हो सका परिणामस्वरूप पशुपालन व्यवसाय के उत्पादों के भंडारण व विपणन पर भी विपरित प्रभाव पड़ा एवं वर्तमान परिस्थितियों में पशुपालन व्यवसाय हानिकारक सिद्ध होने लगा। इससे इस व्यवसाय में लगी श्रम शक्ति रोजगार हेतु शहरों की ओर पलायन को बाध्य हुई।

**जनसंख्या वृद्धि**

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि मानी जाती है लेकिन वर्तमान में आबादी बढ़ जाने के कारण प्रति परिवार उत्पादन कम हो गया है। जहाँ 60 वर्ष पूर्व जब औसतन प्रति परिवार 20 बीघा जमीन थी तो आज आबादी के अनुपात में प्रति परिवार मात्र 6–7 बीघा जमीन रह गयी है। इस प्रकार प्रति परिवार की आय पूर्व की तुलना में मात्र 30 प्रतिशत ही रह गयी है।

**मृण शिल्पकला में नवप्रवर्तन या नवाचार द्वारा उद्यमिता**

वस्तुतः उद्यमिता नवाचार के लिए ही जन्म लेती है तथा नवाचार से ही विकसित एवं सफल होती है। उद्यमिता की प्रकिया में उद्यमी तकनीक, सामग्री, संसाधनों आदि में नवाचार करता है तथा आवश्यक परिवर्तन करता है। पीटर ड्रकर के शब्दों में ,"नवाचार उद्यमिता का एक विशिष्ट उपकरण है । यह नवाचार वह कार्य है जो संसाधनों में दौलत सृजन करने की क्षमता प्रदान करता है।" उद्यमिता अपनाने वाले व्यक्तियों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।[3] शिल्पकला के भी पारम्परिक स्वरूप में नवाचार के द्वारा उद्यमिता को विकसित किया जा सकता है। जिससे इस कला में रूचि रखने वाले तथा संस्कृति को समझने व जानने के इच्छुक वर्गों को इस कला से प्रभावित किया जा सके। व्यावसायिकरण के इस युग में हर कला नवाचार मांगती है इसी कला को सृजनशीलता के माध्यम से अधिक आकर्षक बनाया जा सकता है।

सामान्यतः सभी व्यक्तियों में सृजनशीलता का गुण पाया जाता है किसी में कम तो किसी में अधिक लेकिन यह गुण होता जरूर है। सृजनशीलता में अभिवृद्धि अवश्य की जा सकती है।

नवाचार के लिए शिल्पकारों को निम्नलिखित प्रयास किये जाने चाहिएः–

1. मूर्त्तिकला को और अधिक आकर्षक बनाना।
2. मेले व प्रदर्शिनियों के माध्यम से शिल्पकला का प्रचार–प्रसार।
3. सरकारी योजनाओं का पूर्ण लाभ उठाना।
4. विद्यालयों में शिल्पकला के माध्यम से रोजगारोन्मुखी शिक्षा।
5. महिलाओं को शिल्पकला में प्रशिक्षण दिया जाय।
6. पारम्परिक विषयों के अलावा अनेक वर्तमान परिस्थितियों के विषयों को भी शिल्पकला में शामिल किया जाय।

**मृण शिल्पकला/मूर्त्तिकला**

जिन रचनाओं के माध्यम से मनुष्य अपनी मन की भावनाओं को व्यक्त करता है अपने आसपास के परिवेश तथा अपनी धार्मिक आस्थाओं में विश्वास व्यक्त करता है उसका माध्यम मूर्त्तयाँ भी है। मूर्त्तियों का प्रारम्भ तभी से हो जाता है जब मानव सभ्यता की शुरूआत होती है। राजस्थान में परम्परागत मूर्त्तिकला एक व्यवसाय के रूप में विकसित हुई है।[4] जयपुर में संगमरमर की मूर्त्तियाँ बनाने का काम बहुत प्रसिद्ध है, डुँगरपुर व बाँसवाड़ा के निकट तलवाड़ा ग्राम में काले पत्थरों को तराश कर मूर्त्तियाँ बनाई जाती है यह पत्थर संगमरमर से नरम होता है, लाल पत्थर की मूर्त्तियाँ बनाने का काम अलवर जिले के थनागाजी तहसील के सिरी, किशोरी, मांदरी आदि निकटवर्त्ती गाँवों में होता है। आबूपर्वत, उदयपुर, राजसमन्द, सिरोही आदि नगरों में पत्थरों पर मूर्त्तियों का निर्माण होता है, चित्तौड़गढ़ जिले के बस्सी गाँव में काष्ठ की बहुत सुन्दर मूर्त्तियाँ बनाई जाती है। जोधपुर के लकड़ी के झूले बहुत प्रसिद्ध है ।[5] नाथद्वारा के निकट स्थित मोलेला की मृण शिल्पकला विश्वप्रसिद्ध है।परम्परागत रूप से चिकनी मिट्टी से सुन्दर मूर्त्तियों के निर्माण की कला को मृण शिल्पकला के नाम से जाना जाता है। चिकनी मिट्टी को कूट–छानकर मूर्त्तियाँ बनाने के लिए तैयार किया जाता है। गीली मिट्टी से एक फलक तैयार करते हैं तथा उस पर गीली मिट्टी से ही सुन्दर आकृतियों का निर्माण किया जाता है फिर उन्हें पकाया जाता है। फिर उन मूर्त्तियों पर टेराकोटा रंग करके तथा पारम्परिक चूने के द्वारा सजाया जाता है।

**मोलेला की मृण शिल्पकला पर सूक्ष्म अध्ययन**

दक्षिणी राजस्थान के राजसमन्द जिले के विश्वप्रसिद्ध श्री नाथजी की नगरी नाथद्वारा धार्मिक पर्यटन का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। यहाँ से लगभग 17 किमी. की दूरी पर मृण शिल्पकला में प्रसिद्धी प्राप्त छोटा सा गाँव बसा हुआ है जो कि मोलेला के नाम से जाना जाता है। यह गाँव खमनोर एवं प्रसिद्ध बनास नदी के उत्तर में स्थित है। मिट्टी से मूर्त्तियाँ बनाने की कला अति प्राचीन है तथा यह बहुत ही कठिन शिल्पकारी है। संसार भर में मृण शिल्पकला (टेराकोटा) का निर्माण होता रहा है।[6] राजस्थान में जहाँ वर्षा कम होती है तथा वर्ष में कुछ ही दिन होती है वहीं शिल्पकारों के लिए मिट्टी की मूर्त्तियाँ व अनेक शिल्प के निर्माण का कार्य सुविधाजनक हो जाता है। इन्हीं शिल्पकारों में से कुछ शिल्पकार नाथद्वारा के निकट बसे सुन्दर गाँव मोलेला में निवास करते हैं। यहाँ के शिल्पकार अनेक बार विदेश जाकर अपनी कला का प्रचार–प्रसार व प्रदर्शन कर चुके है तथा कई स्थानीय शिल्पकारों/कलाकारों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान मिल चुका है। सन् 2012 में मृणशिल्पकार मोहनलाल कुम्हार को इस कला के लिए पद्म श्री भी मिल चुका है। मोलेला की मिट्टी को आकार देने का काम बहुत ही खुबसूरती व कुशलता के साथ किया जाता है। चिकनी मिट्टी से बनाई जाने वाली इस शिल्पकला के विभिन्न विषय रहे हैं। जैसेः– गणेश, श्री नाथजी, लक्ष्मी, महिषासुर मर्दिनी, कृष्ण, गोप–गोपियाँ, सामान्य जन, स्थानीय लोक देवताओं आदि विषयों पर ये शिल्पकार एसी सजीव मूर्त्तियाँ बनाते हैं मानो अभी बोल पड़ेंगी। विशाल हाथी व घोड़े भी इन शिल्पकारों के प्रिय विषय रहे हैं। कुछ वर्षों से उपेक्षा झेल रही इस कला को आधुनिक समय में कला में रूचि रखने वाले लोगों ने पुनः रूचि लेना प्रारम्भ किया है, कई कला केन्द्रों में एवं घरों पर सजाई जाने वाली मोलेला की ये मूर्त्तियाँ परम्परागत कला की साक्षी बन गई है।

इस गाँव की यह परम्परा रही है कि ये शिल्पकार मूर्त्तियाँ मोलेला गाँव में ही बनाते हैं उनका विक्रय कहीं भी किया जा सकता है। मोलेला कला इतनी आकर्षक है कि जब भी कभी ये मोलेला कलाकार अपने इन उत्पादों को विक्रय के लिए मेले प्रदर्शनियों आदि में प्रस्तुत करते हैं तो लोग आकर्षित हुए बिना नहीं

रह सकते और सजावट की ये वस्तुएं एवं घरेलू उपयोग में काम आने वाले इन उत्पादों को अवश्य क्रय करते हैं।

**मोलेला की सुन्दर व आकर्षक कलाकृतियाँ**

**मोलेला कलाकारों की समस्याएं**

मोलेला कलाकारों को इस शिल्पकला को जिन्दा रखने के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अगर समय रहते इनकी समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब मोलेला का टेराकोटा इतिहास में तब्दील हो जाएगा।[7] मोलेला कलाकारों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैः–

**गुणवत्तायुक्त मिट्टी के भंडार का अभाव**

मृण शिल्पकला के लिए विश्वभर में मशहूर टेराकोटा आर्ट पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। मिट्टी को मनमुताबिक आकार देने में मृणशिल्पकारों के पसीने छूटने लगे हैं। यहाँ की मिट्टी की गुणवत्ता में कमी आने लगी है। उपयोग में ली जाने वाली विशेष गुणवत्ता वाली मिट्टी के

भंडार का सिमटना इसका मुख्य कारण है। मोलेला और पास ही के गाँव सेमा के दो तालाबों में यह मिट्टी पाई जाती है, जिसका भंडार लगभग समाप्त हो चुका है।[8]

**सरकार की अनदेखी**

मोलेला के टेराकोटा को पहचान दिलाने में यहाँ की विशेष चिकनी मिट्टी मोलेला के आसुला तालाब और सेमा के सोलह का सापा तालाब में है। मोलेला के आसुला तालाब को वर्ष 2015 में मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के तहत गहरा कर दिया गया है तथा सरकारी नुमाइन्दों की अनदेखी के चलते आसुला तालाब में यहाँ के ईंट भट्टा संचालको ने भट्टे की पकी मिट्टी व टूटे ईंट के टुकड़े बड़ी मात्रा में डाल दिए हैं जिससे मिट्टी में कंकरीट शामिल हो गई है।[9]

**उचित मेहनताना नहीं मिलना**

मोलेला कला भले ही कलाप्रेमियों की पसंद रही है लेकिन आमजन मोलेला उत्पाद की बजाय प्लास्टिक व अन्य धातुओं की वस्तुएं खरीदना पसंद करते हैं जो कि कम मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। परिणामस्वरूप या तो आमजन मोलेला उत्पादों को क्रय ही नहीं करते हैं और क्रय करते भी हैं तो अत्यन्त कम मूल्य पर जिससे उन्हें उचित मेहनताना तक नहीं मिलता है।

**प्रशिक्षण का अभाव**

मोलेला की इस शिल्पकला के प्रशिक्षण के लिए वर्तमान में कोई व्यवस्था नहीं है जिससे सिर्फ परिवार के लोग जो इस कला में रूचि रखते हैं वे ही इस कला में प्रशिक्षण लेकर पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला का हस्तांतरण कर रहे हैं । अन्य वर्ग जो इस कला को सिखने में रूचि रखते हैं वे इस कला का प्रशिक्षण नहीं ले पाते है।

**प्रचार प्रसार का अभाव**

किसी भी उत्पाद का यदि व्यावसायिकरण करना है तो उसका विपणन व उचित प्रसार प्रसार अनिवार्य है । सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्रों द्वारा तथा अन्य कलाप्रेमियों द्वारा इस कला का उचित प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए।

**उद्यमिता का अभाव**

उद्यमिता की प्रथम आवश्यकता है नवप्रवर्तन और जब तक किसी भी कार्य में नवाचार नहीं किया जाएगा तब तक उसे उद्यमिता के रूप में विकसित नहीं

किया जा सकता है। अतः मोलेला शिल्पकारों के लिए यह आवश्यक है कि इस कला में नवाचार कर उद्यमिता को विकसित करे जिससे आर्थिक रूप से शिल्पकार सुदृढ़ हो सके।

**पर्यटन के विकास में शिल्पकला का योगदान एवं महत्व**

राजस्थान अपनी समृद्ध एतिहासिक विरासत, प्राकृतिक सुन्दरता, स्थानीय कला, शिल्प व सांस्कृतिक आकर्षण के लिए देशी विदेशी सैलानियों की श्रेष्ठ पसन्द है। राजस्थान भव्य राजसी महल, किले, राजपूती, मुगलाई व पाश्चात्य स्थापत्य शिल्पकला की बेजोड़ धरोहर से समृद्ध है और यह समृद्धि पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। आज समस्त विश्व में पर्यटन को एक महत्वपूर्ण उद्योग माना जाने लगा है भारत को भी पर्यटन से प्रतिवर्ष कई अरबों रूपयों की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इसमें राजस्थान का महत्वपूर्ण योगदान है सामान्यतया एक तिहाई विदेशी पर्यटक राजस्थान आते हैं।[10] पर्यटकों से होटल, परिवहन, हाथकरघा, गाइड व्यवसाय, हैण्डीक्राफट, टैक्सी, परिवहन, फोटोग्राफी, भोजनालय व रेस्टोरेन्ट, दस्तकारी, मनोरंजन केन्द्र, शिल्पकला आदि उद्यमों को प्रोत्साहन मिलता है। राजसमन्द जिले में नाथद्वारा सर्वाधिक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है यहाँ व्यावसायियों की संख्या भी बहुत अधिक है तथा यहाँ का आर्थिक आधार भी पर्यटन व श्रीनाथ जी मन्दिर के इर्द गिर्द ही घूमता है। देशी विदेशी पर्यटकों में यहाँ की शिल्पकलाओं के प्रति विशेष आकर्षण देखा गया है। विदेशी पर्यटकों की राजस्थान की ग्रामीण पर्यटन के प्रति बढ़ती रूचि को देखते हुए लगता है कि विदेशी पर्यटकों को पर्यटन के प्रति और अधिक प्रोत्साहित किया जा सकता है। क्योंकि विदेशों में भी भारतीय संस्कृति अपना रंग जमा रही है विदेशों में आयोजित कार्यक्रमों में राजस्थानी कलाकार कई कार्यक्रमों में हिस्सा लेकर अपनी पहचान बना रहे हैं। कालबेलिया नृत्य हो या लोक कलामण्डल की कठपुतली, मोलेला शिल्पकला हों या मांड गायिका मांगी बाई सभी ने अपने हुनर से विदेशी क्षेत्रों में पहचान बनाई है।

हाल ही में शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध मोलेला के शिल्पकार राजेन्द्र प्रजापत को छत्तीसगढ़ में आयोजित एक समारोह में कपड़ा मंत्री स्मृति इरानी एवं मुख्यमंत्री रमनसिंह के द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया है।[11] इसके अलावा पूर्व में कई शिल्पकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके है। आजकल पर्यटकों में मिट्टी से बने उत्पादों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है जो कि दिखने में आकर्षक व स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद सिद्ध हो रहे हैं। जैसेः– मिट्टी के कुल्हड़, सुराही, हाण्डी, मटकी व मूर्त्तियाँ इत्यादी उत्पाद हैं जिसे पर्यटक उपयोग करने में प्राथमिकता देते हैं बजाय प्लास्टिक व प्लास्टर ऑफ पेरिस के बने उत्पाद के एवं ये उत्पाद पर्यावरण सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी बहुउपयोगी हैं।

**निष्कर्ष**

उपरोक्त विवरण व अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की शिल्पकला देश की अमूल्य विरासत है तथा यह मूलतः ग्रामीण परम्परा है जो कि ग्रामीण पर्यटन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। भारतीय संस्कृति की इस अमूल्य विरासत को सरकार द्वारा संरक्षण प्रदान करने के लिए उचित उपाय किये जाने चाहिए तथा शिल्पकारों को इस कला के प्रोत्साहन व व्यावसायिकरण के लिए अनुदान भी उपलब्ध कराना चाहिए। जिससे ये कला देश के आर्थिक विकास में और अधिक सहभागी बन सके। ग्रामीण पर्यटन के विकास में शिल्पकला का महत्वपूर्ण योगदान है तथा इस कला को यदि उचित सम्मान व प्रोत्साहित किया जाए तो इस क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

*राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा– डॉ, जयसिंह नीरज, डॉ, भगवतीलाल शर्मा*
*राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास– डॉ, राम पाण्डे*
*उद्यमिता के मूलाधार– डॉ,आर, एल, नौलखा*
*गाइड बुक श्री नाथद्वारा – सत्येश बागोरा*
*भारतीय संस्कृति और शिक्षा– यमुनाशंकर दशोरा*
*चित्रकला, स्थापत्य और स्केचिंग की बारीकियां–पी. मंशाराम*

**अंत टिप्पणी**

1. *राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहासः– डॉ, राम पाण्डे*
2. *लोक मूर्त्तिकला लेखः– ड़ॉ, ओ, पी, जोशी*
3. *उद्यमिता के मूलाधारः– ड़ॉ, आर, एल, नौलखा*
4. *राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहासः– डॉ, राम पाण्डे*
5. *लाक मूर्त्तिकलाः– डा, ओ, पी, जोशी*
6. *लेख राजस्थान पत्रिकाः– अश्वनीप्रताप सिंह, राजसमन्द*
7. *लेख राजस्थान पत्रिकाः– अश्वनीप्रताप सिंह, राजसमन्द*
8. *लेख राजस्थान पत्रिकाः– अश्वनीप्रताप सिंह, राजसमन्द*
9. *लेख राजस्थान पत्रिकाः– अश्वनीप्रताप सिंह, राजसमन्द*
10. *पर्यटन क्षेत्रों में रोजगार :– राजस्थान पत्रिका*
11. *समाचार पत्र :– राजस्थान पत्रिका*